

---

shrI lakShmIsUkta

श्रीलक्ष्मीसूक्त

Document Information

---

Text title : lakShmIsUkta

File name : laxmiisukta.itx

Category : sUkta, devii, lakShmI, svara, devI

Location : doc\_devii

Author : Traditional

Transliterated by : WebD

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update : September 11, 2005

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 2, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीलक्ष्मीसूक्त



श्री गणेशाय नमः ।

ॐ पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।  
विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥

पद्मानने पद्मऊरु पद्माश्री पद्मसम्भवे ।  
तन्मे भजसिं पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥

अश्वदायै गोदायै धनदायै महाधने ।  
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥

पुत्रपौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवेरथम् ।  
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्योर्धनं वसुः ।  
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमस्तु मे ॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।  
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।  
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जापिनाम् ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे ।  
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते ।  
धान्य धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।  
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे महेश्रियै च धीमहि ।

तन्नः श्रीः प्रचोदयात् ॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।

लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥

चन्द्रप्रभां लक्ष्मीमैशानीं सूर्याभांलक्ष्मीमैश्वरीम् ।

चन्द्र सूर्याग्निसङ्काशां श्रियं देवीमुपास्महे ॥


॥ इति श्रीलक्ष्मी सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

---

——  
*shrI lakShmIsUkta*

pdf was typeset on February 2, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

